



Gainer Academy

CLASS - 11TH

Psychology (मनोविज्ञान)

Chapter - 6

Learning सीखना



www.gaineracademy.in



Gainer Academy





Lesson - 6

अधिगम

❦ अधिगम का स्वरूप :

- अधिगम को हम अनुभवों के कारण व्यवहार में अथवा व्यवहार की क्षमता में होने वाले अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।
- उन परिवर्तनों को ही अधिगम माना जाता है जो अभ्यास और अनुभव के कारण होते हैं और जो अपेक्षाकृत स्थायी होते हैं।

❦ अधिगम की विशेषताएँ :

- पहली विशेषता : अधिगम में सदैव किसी न किसी तरह का अनुभव सम्मिलित रहता है।
- हम एक घटना को बहुत बार एक निश्चित क्रम में घटित होते हुए अनुभव करते हैं।
- अधिगम में मनोवैज्ञानिक घटनाओं का एक क्रम निहित होता है।

निष्पादन : व्यक्ति का प्रेक्षित व्यवहार या अनुक्रिया या क्रिया है।

अधिगम एक अनुमानित प्रक्रिया है और निष्पादन से भिन्न है।



❁ अधिगम के प्रतिमान

• अधिगम की सरलतम विधि :

अनुबंधन → प्राचीन अनुबंधन + क्रियाप्रसूत अनुबंधन

- प्रेक्षणात्मक अधिगम
- संज्ञानात्मक अधिगम
- वाचिक अधिगम
- संप्रत्यय अधिगम
- कौशल अधिगम ।

1) प्राचीन अनुबंधन : इवान. पी. पावलव

पावलव का मुख्य उद्देश्य पाचन क्रिया की शरीरक्रियात्मक प्रक्रियाओं का अध्ययन करना था ।

- अनुबंधन : घंटी और भोजन के बीच इस सादृश्य के कलस्वरूप, घंटी की ध्वनि के प्रति कुत्ते द्वारा लार के स्राव के रूप में प्रदर्शित एक नयी अनुक्रिया की प्राप्ति हुई। इसे अनुबंधन कहा जाता है ।

भोजन : अननुबंधित उद्दीपक (US)

लारस्राव : अननुबंधित अनुक्रिया (UR)

अनुबंधन के पश्चात घंटी की ध्वनि की उपस्थिति में लार का स्राव होने लगता है ।

घंटी : अनुबंधित उद्दीपक (CS)

लार का स्राव : अनुबंधित अनुक्रिया (CR)

इस प्रकार के अनुबंधन को प्राचीन अनुबंधन कहते हैं ।



Date.....3.....

❁ प्राचीन अनुबंधन के निर्धारक ❁

- अनुबंधित अनुक्रिया के अधिगम को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक :

1) उद्दीपकों के बीच समय संबंध : प्राचीन अनुबंधन प्रक्रियाएँ प्रमुखतः चार प्रकार की होती हैं ।

- 1) सहकालिक अनुबंधन
- 2) विलंबित अनुबंधन
- 3) अवशेष अनुबंधन
- 4) पश्चगामी अनुबंधन ।

2) अनुबंधित उद्दीपकों के प्रकार :

- 1) विमुखी
- 2) प्रवृत्त्यात्मक ।

1) प्रवृत्त्यात्मक : अनुबंधित उद्दीपक स्वतः सुगन्ध जैसे - खाना, पीना, डुलारना ।

ये अनुक्रियाएँ संतुष्ट और प्रसन्नता प्रदान करती हैं ।

2) विमुखी अनुबंधित उद्दीपक : जैसे - शोर, कड़वा स्वाद आदि, विद्युत, आघात, पीड़ादायी सूई आदि दुःखदायी और क्षतिकारक होते हैं ।

• ये परिवार और पलायन की अनुक्रियाएँ उत्पन्न करती हैं ।



Date..... 4

3) अनुबंधित उद्दीपकों की तीव्रता : उद्दीपकों की तीव्रता विमुखी प्राचीन अनुबंधन दोनों की दिशा की प्रभावित करती है ।

❁ क्रियाप्रसूत / नैमित्तिक अनुबंधन

❁ बी. स्फ स्किनर → उन्होंने ऐच्छिक अनुक्रियाओं के धारित होने का अध्ययन किया, जो प्राणी द्वारा अपने पर्यावरण में सक्रिय होने पर होती है । स्किनर ने इसे क्रियाप्रसूत कहा ।

क्रियाप्रसूत : वे व्यवहार या अनुक्रियाएँ हैं, जो जानवरों और मानवों द्वारा ऐच्छिक रूप से प्रकट की जाती हैं और उनके नियंत्रण में रहती हैं ।

• स्किनर ने क्रियाप्रसूत अनुबंधन से संबंधित अपने अध्ययन चूहों और कबूतरों पर किए थे ।

नैमित्तिक अनुबंधन : लीवर दबाने की अनुक्रिया भोजन प्राप्त करने का निमित्त है । इसलिये इस प्रकार के अधिगम को नैमित्तिक अनुबंधन कहा जाता है ।

❁ क्रियाप्रसूत अनुबंधन के निधरिक : क्रियाप्रसूत या नैमित्तिक अनुबंधन अधिगम का एक प्रकार है जिसमें इसके परिणाम से व्यवहार को सीखा जाता है, बनाए रखा जाता है, अथवा उसमें परिवर्तन किया जाता है । इसे परिणाम को प्रबलक कहा जाता है ।



प्रबलक : ऐसा कोई भी उद्दीपक या घटना है जो किसी अनुक्रिया के घटित होने की संभावना को बढ़ता है।

प्रबलन के प्रकार :
 1) धनात्मक
 2) ऋणात्मक ।

• प्रबलन अनुसूचियों : प्रबलन अनुसूची अनुबंधन के तथ्यांशों के दौरान प्रबलन उपलब्ध कराने की व्यवस्था को कहते हैं।

• सतत प्रबलन : प्रत्येक बार जब वांछित अनुक्रिया घटित होती है तब उसे प्रबलन दिया जाता है तो हम उसे सतत प्रबलन कहते हैं।

• आंशिक प्रबलन : सुविराम अनुसूची में अनुक्रियाओं को कभी प्रबलित किया जाता है कभी नहीं।

• विलंबित प्रबलन : किसी भी प्रबलन की प्रबलनकारी क्षमता विलंब के साथ -2 कम होती जाती है।

• प्रमुख अधिगम प्रक्रियाएँ :
 1) प्रबलन
 2) विलोप
 3) विभिन्न
 4) स्वतः पुनः प्राप्ति ।

1) प्रबलन : प्रबलन प्रयोगकर्ता द्वारा प्रबलक देने की क्रिया का नाम है।

1) प्राथमिक प्रबलक
 2) द्वितीयक प्रबलक ।



Date.....

ii) विलोप : अधिगत अनुक्रिया के लुप्त होने से जो सबलन को उस परिस्थिति से हटा लेने के कारण होती है जिसमें अनुक्रिया घटित हुआ करती थी ।

iii) सामान्यीकरण तथा विमर्दन : समान उद्दीपकों के प्रति समान अनुक्रिया करने के इस गौचर को सामान्यीकरण कहते हैं ।

• जब एक सीखी हुई अनुक्रिया की एक नए उद्दीपक से प्राप्ति होती है तो उसे सामान्यीकरण कहते हैं ।

• स्वतः पुनः प्राप्ति : स्वतः पुनः प्राप्ति किसी अधिगत अनुक्रिया के विलोप होने के बाद होती है ।

❀ प्रेक्षणात्मक अधिगम ❀

(बंदूरा) • प्रेक्षणात्मक अधिगम दूसरों का प्रेक्षण करने से घटित होता है ।

• इस प्रकार के अधिगम में व्यक्ति सामाजिक व्यवहारों को सीखता है, इसलिए इसे कभी-2 सामाजिक अधिगम भी कहा जाता है ।

मांडलिग : ऐसी स्थितियों में हम दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण करते हैं और उनकी तरह व्यवहार करने लगते हैं ।

• प्रेक्षण द्वारा अधिगम की प्रक्रिया में प्रेक्षक मांडल के व्यवहार का प्रेक्षण करके ज्ञान प्राप्त करता है ।



Date..... 7.....

• बच्चे अधिकांश सामाजिक व्यवहार प्रौढ़ का वैधान तथा उनकी नकल करके सीखते हैं।

• बच्चों में व्यक्तित्व का विकास भी वैधानात्मक अधिगम के द्वारा होता है। आक्रामकता, परोपकार, आदर, नम्रता, परिश्रम, आलस्य आदि गुण भी अधिगम की इसी विधि द्वारा अर्जित किये जाते हैं।

ॐ संज्ञानात्मक अधिगम ॐ

संज्ञानात्मक अधिगम में सीखने वाले व्यक्ति के कार्यकलापों की बजाय उसके ज्ञान में परिवर्तन आता है।

1) अंतर्दृष्टि अधिगम: कौटलर

एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी समस्या का समाधान एकारक स्पष्ट हो जाता है।

2) अव्यक्त अधिगम: टौलमैन

अव्यक्त अधिगम में एक नया व्यवहार सीखा लिया जाता है, किंतु व्यवहार दर्शाना नहीं जाता, जब तक कि उसे दर्शाने के लिए प्रबलन प्रदान नहीं किया जाता है।

ॐ वाचिक अधिगम ॐ

• वाचिक अधिगम के अध्ययन में प्रमुख विधियाँ :



Date.....8.....

1) युग्मित सद्यर अधिगम : यह विधि उद्दीपक-उद्दीपक अनुबंधन और उद्दीपक-अनुक्रिया अधिगम के समान है।

2) क्रमिक अधिगम : वाचिक अधिगम की इस विधि का उपयोग यह जानने के लिए किया जाता है कि प्रतिभागी किसी शब्दिक संकाशों की सूची को किस तरह सीखता है और सीखने में कौन-2 सी प्रक्रियाएँ शामिल हैं।

3) मुक्त पुनः स्मरण : इस विधि का उपयोग यह जानने के लिए किया जाता है प्रतिभागी शब्दों को स्मृति में संचित करने के लिए किस तरह से संगठित करता है।

❁ वाचिक अधिगम के निर्धारक : ❁

- 1) सूची की लंबाई
- 2) सामग्री की अर्थपूर्णता।

❁ संप्रत्यय अधिगम ❁

संप्रत्यय : एक श्रेणी है जिसका उपयोग अनेक वस्तुओं और घटनाओं के लिए किया जाता है। जैसे 'परु', 'फल', 'भवन' और 'मीड'।

• दो प्रकार के संप्रत्यय :

- 1) कृत्रिम संप्रत्यय
- 2) स्वाभाविक संप्रत्यय या श्रेणियाँ।



❁ कौशल अधिगम ❁

- कौशल को किसी जटिल कार्य को आसानी से और दक्षता से करने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया गया है।
- ये कौशल अनुभव और अभ्यास से सीखे जाते हैं।
→ कार चलाना, हवाई जहाज उड़ाना, समुद्री जहाज चलाना, आशुलिपी में लिखना व पढ़ना आदि।

❁ अधिगम अंतरण ❁

- नए अधिगम पर पूर्व अधिगम के प्रभाव से हैं। यदि पूर्व अधिगम नए अधिगम में सहायक होता है तो अंतरण को धनात्मक कहा जाता है।
- यदि नया अधिगम पहले के अधिगम के कारण मंद हो जाता है तो इसे ऋणात्मक अंतरण कहते हैं।
- सहायक या मंदक प्रभाव की अनुपस्थिति शून्य अंतरण को व्यक्त करती है।
- अवशिष्ट अंतरण : पूर्ण अधिगम व्यक्ति को दूसरे कार्य को अच्छे तरीके से सीखने के अनुकूल बना देता है। एक कार्य का सीखना, अधिगमकर्ता को अगला कार्य ज्यादा सुविधा से सीखने के लिए स्फूर्ति प्रदान करता है।



Date...../0.....

- विशिष्ट अंतरण : किसी भी कार्य में विभिन्न उद्दीपकों की एक कड़ी होती है जिसमें प्रत्येक उद्दीपक का एक विशिष्ट अनुक्रियाओं के साथ सादृश्य बनाना होता है। यदि पहले सीखे जाने वाले कार्य 'अ' का अंतरण प्रभाव बाद में सीखे जाने वाले कार्य 'ब' पर पड़े तो इसे विशिष्ट अंतरण कहते हैं।

❧ अधिगम को सुगम बनाने वाले कारक ❧

- 1) सतत बनाम आंशिक प्रबलन
- 2) अभिवृत्ति
- 3) अधिगम की तत्परता।

❧ अधिगमकर्ता : अधिगम शैलियाँ :

अधिगम शैली को 'अधिगम के संदर्भ में किसी अधिगमकर्ता द्वारा उद्दीपकों का उपयोग करने तथा अनुक्रिया करने की सुसंगत शैली के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

- अधिगम शैलियाँ मुख्यतः प्रात्यक्षिक प्रकारता, सूचना प्रक्रमण तथा व्यक्तित्व प्रतिरूप से व्युत्पन्न होती हैं।

❧ अधिगम अक्षमता ❧

- अधिगम अक्षमता : एक सामान्य पद है। इसका



Date.....//.....

अर्ध विभिन्न प्रकार के उन विकारों के समूह से है, जिनके कारण किसी व्यक्ति में सीखने, पढ़ने, लिखने, बोलने, तर्क करने तथा गणित के प्रश्न हल करने आदि में कठिनाई होती है।

- अधिगम अशक्तता के साथ-2 किसी बच्चे में शारीरिक अक्षमता, संवेदी अक्षमता, बौद्धिक अशक्तता भी हो सकती है या अधिगम अशक्तता इनके बिना भी हो सकती है।

❁ अधिगम अशक्तता के लक्षण :

- 1) अक्षरी, शब्दी तथा वाक्यांशों को लिखने में लिखी हुई सामग्री को पढ़ने में तथा बोलने में बहुत कठिनाई पाई जाती है।
- 2) अधिगम अशक्तता वाले बच्चों में अवधान से जुड़े विकार पाए जाते हैं।
- 3) अधिगम अशक्तता वाले बच्चों में स्थान व समय की समझदारी की कमी आम लक्षण है।
- 4) अधिगम अशक्तता वाले बच्चों का पैथीय समन्वय तथा दस्त - निपुणता अपेक्षाकृत निम्न होती है।
- 5) ये बच्चे काम करने के मौखिक अनुदेशों को समझने और अनुसरण करने में असफल होते हैं।
- 6) सामाजिक संबंधों का मूल्यांकन भी ये ठीक से नहीं कर पाते।



Date.....12.....

7) अधिगम अशक्तता वाले बच्चों में आम तौर से प्रत्यक्षिक विकार भी पाए जाते हैं।

8) अधिगम अशक्तता वाले अधिकांश बच्चों में पठनवैकल्प के लक्षण पाए जाते हैं।

❁ अधिगम सिद्धांतों के अनुप्रयोग ❁

मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को समृद्ध करने में अधिगम के सिद्धांत अत्यंत मूल्यवान हैं।

क्षेत्र :

- 1) संगठन
- 2) कुसमायोजित व्यवहारों के उपचार
- 3) पालन-पोषण
- 4) विद्यालय अधिगम।

WELCOME TO GAINER ACADEMY

I am Pankaj Verma Welcome to Our Study Verse Learn Anything, Anywhere, Anytime. Improve your skills with our Tutorials. Unlock your potential and achieve success with us and Unleash your inner genius with our expert guidance.

We are offering a wide range of educational programs for all age groups and all standard. We have dedicated teachers for helping students to reach their full potential and also guide students of their journey to success.

we are also available on



www.gaineracademy.in



GAINER ACADEMY



gaineracademy@gmail.com



[gainer_academy](https://www.instagram.com/gainer_academy)

